❖ अमरावती, गुरुवार १४ से २० मई २०२६ ❖ वर्ष १५ ❖ अंक ५२ मूल्य १०/- पृष्ठ ८ ❖पोस्टल रजि. नं. ATI/RNP/268/2025-2027 डाक : शुक्रवार – शनिवार

विदर्भ स्वाभिमान

RNI NO. MAHHIN / 2010 /43881

संपादक : सुभाषचंद्र जे. दुबे | प्रबंधक : सौ. वीणा एस. दुबे

श्रीमद् भागवत कथा विशेषांक

E-Mail-vidarbswabhiman@gmail.com

बाबूजी के आदर्श विचार

पूज्य बाबूजी का जीवन सिद्धांत

जिस परिवार में एकता होती है, भाइयों में निःस्वार्थ प्रेम होता है, भक्ति भाव की गंगा बहती है, वही परिवार असली मायने में भाग्यशाली होता है. उस परिवार में गरीबी में भी आनंद आता है.

विशेष मार्गदर्शक

मा.श्री. सुदर्शनजी गांग (जैन)

श्रद्धा और विश्वास के प्रतीक हैं मां पार्वती-भगवान महादेव

अच्छा कर्म करने वाले के साथ नहीं होता है बुरा शिक्षक बनने की चाहत थी, प्रभु ने दिशा मोड़ी

जीवन में श्रद्धा और विश्वास जब मिल जाते हैं तो कुछ भी असंभव नहीं होता है. प्रभु को निर्मल मन वाले भक्त पसंद होते हैं. किसी के साथ हम छल-कपट करते हैं तो निश्चित तौर पर इसी जन्म में भुगतना पड़ता है. जीवन में किसी को हंसा नहीं सकते हैं तो आंसू का कारण कभी नहीं बनना चाहिए, इस आशय का उपदेशपूर्ण मत जाने-माने कथाकार पं.अवधनारायण शुक्ल उर्फ वियोगी महाराज ने व्यक्त किया.

महाराष्ट्र के अमरावती से प्रकाशित होने वाले विदर्भ स्वाभिमान के साथ साक्षात्कार में उन्होंने बताया कि इंसानी सीमा जहां से खत्म होती है, प्रभु की सीमा वहां से शुरू होती है. श्रीमद् भागवत कथा जीवन जीने की कला सिखाती है. भगवान श्रीकृष्ण को जगत गुरू कहा जाता है. उनके मुताबिक जीवन में श्रीराम कथाएं कम लेकिन भागवत कथा तथा देवी भागवत कथा अधिक करते हैं. श्रद्धा और विश्वास को अदृश्य शक्तियाँ मानते हुए उन्होंने कहा कि यह सबसे अधिक प्रभाव डालती हैं. श्रद्धा और विश्वास न दिखाई देते हैं, न छुए जा सकते हैं, लेकिन इनके बल पर असंभव भी संभव बन जाता है। जिस व्यक्ति के भीतर सच्ची श्रद्धा और अडिग विश्वास होता है, उसके कदम डगमगाते नहीं, चाहे

(शेष पृष्ठ ६ पर)

प्रभु की कृपा मानते हैं वियोगी महाराज

उनके मुताबिक घर में भतीजा पत्रकार, भाई प्राध्यापक के साथ ही बहू, भतीजा जहां शिक्षक हैं, वहीं एक भतीजा देश सेवा सेना के अधिकारी के रूप में कर रहा है. देश सेवा के साथ ही मानवता की सेवा को महत्वपूर्ण मानते हैं. उनके मुताबिक सत्संग जीवन में हर स्थिति से लड़ने की प्रेरणा देता है. उनका इस क्षेत्र में आना प्रभु की कृपा और मर्जी मानते हैं. साथ ही कथाओं के दौरान जिस तरह से भक्तों का प्रतिसाद मिलता है, उसे भी प्रभु की कृपा बताते हैं. साथ ही सभी का जीवन खुशियों और मंगलमय होने का आशिर्वाद दिया.

भक्तिभाव सदा बढ़ाने की कृपा करना प्रभु

विदर्भ स्वाभिमान साक्षात्कार

मनुष्य के जीवन में भक्ति केवल एक धार्मिक कर्म नहीं, बल्कि आत्मिक शांति और आंतरिक शक्ति का स्रोत है। जब व्यक्ति ईश्वर के प्रति सच्चे मन से समर्पित होता है, तो उसके भीतर सकारात्मकता, धैर्य और संतोष का संचार होता है। जब तक सांसें चलती रहें, आपका नाम स्मरण सदा करता रहूं और जीवन के अंतिम समय में भी अपने चरणों का दास बनाए रखना, इस आशय की इच्छा पं.राधेश्याम दुबे ने व्यक्त की. तीर्थ यात्रा पूरी करने में सफलता को प्रभु की कृपा बताते हुए उन्होंने कहा कि कर्म के साथ ही प्रभु की कृपा के लिए जितना संभव होता है भक्तिभाव करने का प्रयास करते हैं, प्रभु के प्रति यह असीम भक्ति सदैव बनाए रखने की अपेक्षा उन्होंने व्यक्त की.

उनके मुताबिक जीवन में अगर आपका भाव शुद्ध है तो प्रभु निश्चित तौर पर मुसीबत से निकालते हैं. जीवन में कर्मों से ही सुख और दुःख की प्राप्ती होती है. सुख में अहंकार कभी नहीं आने देना चाहिए, ठीक उसी तरह दुःख में प्रभु के प्रति विश्वास अटल रहना चाहिए. भक्तिभाव को निरंतर बढ़ाते रहना जीवन को सार्थक बनाने का मार्ग है। भक्ति का अर्थ केवल पूजा-पाठ या मंदिर जाना नहीं है, बल्कि हर कार्य को ईश्वर को समर्पित भाव से करना ही सच्ची भक्ति

(शेष पृष्ठ ६ पर)

धौरहरा में समस्त दुबे परिवार द्वारा आयोजित श्रीमद् भागवत कथा को हमारी हार्दिक शुभकामनाएं.

जीवन में सत्संग का अनन्य महत्व

हर व्यक्ति के जीवन में नाम सुमिरन और सत्संग का अत्यधिक महत्व रहता है. सत्संग का मतलब ही सत्य का संग होता है. यह जहां भी होता है वहां पर षटविकार नहीं आते हैं और जीवन में हर तरह की स्थिति से निपटने की ताकत हमें मिलती है. धौरहरा निवासी दुबे परिवार द्वारा 14 से 21 तक हो रही श्रीमद् भागवत कथा ज्ञान यज्ञ सप्ताह को तथा चारों धाम और भगवान जगन्नाथ की यात्रा पूरी करने वाले राधेश्याम दुबे सहित परिवार को हार्दिक शुभकामनाएं.

- शुभेच्छुक -

सुदर्शन गांग, अरुणभाऊ कडू, प्रदीप जैन
तथा समस्त आनंद परिवार, अमरावती

संपादकीय .....

दूबे परिवार का है अहोभाग्य

भारतीय संत परंपरा में एक प्रसिद्ध पंक्ति है- बड़े भाग्य मानुस तन पावा,सुर दुर्लभ सद्ग्रंथ न गावा.यह पंक्ति हमें यह याद दिलाती है कि मनुष्य का जन्म कोई साधारण घटना नहीं, बल्कि ईश्वर का अनमोल उपहार है। इस सृष्टि में असंख्य जीव-जंतु हैं, परंतु उनमें से केवल मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जिसे बुद्धि, विवेक और आत्मचिंतन की अद्भुत क्षमता प्राप्त है। धौरहरा निवासी दुबे परिवार का यह भाग्य है कि हमारे पूज्य नहीं है चाचा पंडित राधेश्याम दुबे ने चारों धाम और भगवान जगन्नाथ की यात्रा सफलतापूर्वक पूरी की। इस उपलक्ष्य में समस्त दुबे परिवार द्वारा श्रीमद् भागवत कथा ज्ञान यज्ञ का १४ में से आयोजन किया गया है. इसमें श्रद्धेय अवध नारायण शुक्ल उर्फ वियोगी महाराज भाविकों को श्रीमद् भागवत कथा का रसपान करायेंगे। दादा दादी तथा परिवार के संत श्री स्वर्गीय जमुनाप्रसाद, त्याग की प्रतिमूर्ति स्व. गयाप्रसाद जी दूबे सहित सभी वरिष्ठों के आशीर्वाद से यह भव्य आयोजन संभव हो सका है. दुबे परिवार के हर सदस्य का यह भाग्य है कि इस परम सौभाग्यशाली आयोजन में शामिल होने और पुण्य कमाने का मौका मिला है.

मनुष्य जीवन हमें केवल जीने के लिए नहीं, बल्कि कुछ सार्थक करने के लिए मिला है। हम सोच सकते हैं, समझ सकते हैं, सही और गलत का निर्णय कर सकते हैं-यही हमें अन्य प्राणियों से अलग बनाता है। यदि हम इस अनमोल जीवन को केवल भोग-विलास, स्वार्थ और तुच्छ इच्छाओं में व्यर्थ कर दें, तो यह हमारे लिए सबसे बड़ी दुर्भाग्यपूर्ण बात होगी।इस मानव जीवन का उद्देश्य केवल अपने लिए जीना नहीं, बल्कि समाज, परिवार और मानवता के लिए कुछ अच्छा करना भी है। सेवा, करुणा, प्रेम और परोपकार-ये वे गुण हैं जो मनुष्य को श्रेष्ठ बनाते हैं। जब हम किसी जरूरतमंद की मदद करते हैं, किसी दुखी के चेहरे पर मुस्कान लाते हैं, तब हम वास्तव में अपने जीवन को सार्थक बनाते हैं।

आज के भागदौड़ भरे जीवन में लोग अक्सर अपने उद्देश्य को भूल जाते हैं। भौतिक सुख-सुविधाओं की दौड़ में हम मानसिक शांति और आत्मसंतोष खो बैठते हैं। ऐसे समय में यह पंक्ति हमें जागृत करती है कि हम अपने जीवन का सही मूल्य समझें और उसे सही दिशा दें।

हमें चाहिए कि हम अपने समय का सदुपयोग करें, अच्छे संस्कार अपनाएं, और अपने कर्मों से समाज में सकारात्मक बदलाव लाएं। यही सच्चा धर्म है और यही मानव जीवन की सफलता भी।इसलिए इसे व्यर्थ न गंवाएं, बल्कि इसे एक सुंदर, सार्थक और प्रेरणादायक यात्रा बनाएं। श्रीमद् भागवत कथा के माध्यम से दुबे परिवार द्वारा यह प्रयास इसी कड़ी का हिस्सा कहा जा सकता है.

अटूट प्रेम-संस्कारों से बंधा चार भाइयों का आदर्श परिवार

जीवन में खुशियों के लिए आदर्श संयुक्त परिवार के जैसा दूसरा माध्यम नहीं हो सकता. धौरहरा में सम्मानित दुबे परिवार भी ऐसा ही परिवार है. पिछली तीन पीढियां से जो आदर्श संस्कार स्वर्गीय दादाजी पंडित पारसनाथ दुबेजी से मिला है, उस संस्कार की कड़ी को बरकरार ही नहीं रखते बल्कि उसे बढ़ाने का कार्य पूज्य बाबूजी पंडित जमुनाप्रसाद दुबे, हमारे बड़े चाचा पंडित गयाप्रसादजी दुबे, आदर्श शिक्षक के रूप में लाखों छात्रों का जीवन संवारने वाले पं. रामप्रसाद दुबे तथा सबसे छोटे और परिवार की शान के लिए सदा आगे रहने वाले पं. राधेश्याम दुबे ने किया और आदर्श परिवार के रूप में इस परिवार का उल्लेख न केवल गांव बल्कि तहसील स्तर तक किया जाता है. यह संस्कारों का ही परिणाम है कि इतना बड़ा परिवार रहने के बाद भी एक दूसरे के प्रति अपार प्रेम रहकर आज इस परिवार के युवा सदस्यों ने भी अपनी लगन मेहनत से विभिन्न क्षेत्रों में कामयाबी हासिल की है. हमारा आदर्श परिवार केवल खून का रिश्ता नहीं बल्कि वह प्रेम, त्याग, विश्वास और संस्कारों की मजबूत डोर से बंधा एक पवित्र बंधन होता है। जब एक ही घर की छत के नीचे चार भाई मिलकर प्रेम और सद्भाव से जीवन जीते हैं, तो वह परिवार समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत बन जाता है। हमारा परिवार भी कई दशकों से इसी तरह एकता की कड़ी में जुड़ा है. नौकरी पेशा के चलते भले ही कुछ सदस्य बाहर रहते हैं लेकिन आज भी खुशी अथवा दुख के प्रसंग में पूरा परिवार एकजुट होकर हरि स्थिति का मुकाबला करता है. परिवार वास्तव में अटूट प्रेम और श्रेष्ठ संस्कारों का जीवंत उदाहरण साबित हुआ है और तीसरी पीढ़ी को भी परिवार की गरिमा और मान सम्मान बढ़ाने की प्रेरणा दे रहा है. चारों भाइयों में कभी किसी तरह का विवाद नहीं हुआ, कुछ विषयों पर मतभेद हुआ होगा लेकिन यह कभी मनभेद तक नहीं पहुंचा. चार भाइयों का यह परिवार आपसी एकता का प्रतीक है। बड़े भाई को पिता समान सम्मान दिया जाता है, तो छोटे भाई बड़े भाई को मार्गदर्शक और संरक्षक मानते हैं। हर निर्णय आपसी सलाह से लिया जाता है। घर के बुजुर्गों का आदर, माता-पिता की सेवा और बच्चों को अच्छे संस्कार देना - यही इस परिवार की सबसे बड़ी पूंजी है.

स्व.जमुनाप्रसादजी दुबे – स्व.गयाप्रसादजी दुबे

श्री.रामप्रसाद दुबे – श्री.राधेश्याम दुबे

दुबे परिवार की सबसे बड़ी विशेषता है - मैं नहीं, बल्कि हम की भावना। सुख हो या दुःख, लाभ हो या हानि - सब कुछ मिलकर साझा किया जाता है। किसी एक की सफलता पूरे परिवार की खुशी बन जाती है, और किसी एक की समस्या पूरे परिवार की जिम्मेदारी। यही सामूहिक सोच परिवार को मजबूत बनाती रही है. दूसरी पीढ़ी में भी ९ भाइयों मैं समझदारी और किसी तरह का व्यसन नहीं होना निश्चित तौर पर इस परिवार की आदर्श जड़ें कितनी गहराई तक जुड़ी हुई है, इसकी कहानी खुद कहती हैं. भाइयों में सभी उच्च शिक्षित और जिम्मेदार पदों पर रहकर परिवार की गरिमा को बढ़ाने का कार्य कर रहे हैं.

चारों भाइयों के स्वभाव अलग-अलग हो सकते हैं, कार्यक्षेत्र अलग हो सकते हैं, लेकिन उनके दिलों में एक-दूसरे के लिए सम्मान और स्नेह समान है। त्योहारों पर मिलकर उत्सव मनाना, पारिवारिक निर्णयों में पारदर्शिता रखना और बच्चों को एकता का महत्व समझाना - ये सभी बातें परिवार को संस्कारों की मजबूत नींव देती हैं। परिवार भले ही अलग-अलग रहते हैं लेकिन परिवार का हर सदस्य परिवार की गरिमा के लिए अपना योगदान देता है.आधुनिक जीवन की भागदौड़ में भी संयुक्त परिवार की परंपरा को दुबे परिवार ने जीवित रखा है. जहां प्रेम हो, विश्वास हो और त्याग की भावना हो, वहां कोई भी कठिनाई बड़ी नहीं लगती।अंततः, अटूट प्रेम और संस्कारों से सजा चार भाइयों का परिवार केवल एक घर नहीं, बल्कि एक जीवंत आदर्श है। यह परिवार आने वाली पीढ़ियों को सिखाता है कि रिश्तों की असली ताकत धन-दौलत में नहीं, बल्कि दिलों की एकता और आपसी सम्मान में होती है। मुझे भी इस बात का गर्व है कि मैं भी इस आदर्श परिवार का हिस्सा हूं.

हिन्दी साप्ताहिक विदर्भ स्वाभिमान यह पत्र मालिक, प्रकाशक, सम्पादक-सुभाषचंद्र जमुनाप्रसाद दुबे ने एस.बी. प्रिन्टर्स, गांधी चौक,जिला अमरावती (महाराष्ट्र)से मुद्रित कर प्रकाशित किया है. मुद्रक-श्री संदीप बागडे,एस.बी. प्रिन्टर्स, गांधी चौक,अमरावती.जिला अमरावती (महाराष्ट्र).प्रकाशन स्थल-साप्ताहिक विदर्भ स्वाभिमान, छाया कॉलोनी,अकोली रोड,अमरावती. (महाराष्ट्र) मुख्य सम्पादक-सुभाषचंद्र जे.दुबे (पी.आर.बी.कानून के अनुसार सर्वस्वी जवाबदार).मुख्य प्रबंधक- वीणा दुबे,(सभी विवाद अमरावती न्यायालय अंतर्गत)आर.एन.आई.रजिस्ट्रेशन नंबर MAHHIN/2010/43881
मोबाइल नं.-*09423426199,8855019189/8208407139* **E-Mail-vidarbhswabhiman@gmail.com | www.vidarbhswabhiman**

दिव्यांग होकर भी त्याग की मिसाल हैं जगदीश दुबे

शारीरिक चुनौतियों के बावजूद जगदीश दुबे ने अपनी मेहनत, लगन,समर्पण के साथ ही माता-पिता के प्रति सदैव सम्मान की भावना रखकर उच्च शिक्षा प्राप्त की. उनके मुताबिक जीवन संघर्ष है और इससे लड़ने का माद्दा सदा रखना चाहिए. लाखों नेत्रहीन बच्चों के जीवन में शिक्षा देकर प्रकाश लाने वाले जगदीश दुबे के दोनों बेटे संदीप दुबे और बहू शीतल दुबे समुदाय स्वास्थ्य अधिकारी हैं, जबकि छोटा बेटा सुमित अंध विद्यालय में शिक्षक तथा बहू सौ. खुशबू भी चार्टर्ड अकाऊंटंट की शिक्षा प्राप्त कर रही है. बेटी प्रगति ने एमसीए की उच्च शिक्षा हासिल की है. पूरा परिवार उच्च विद्याविभूषित है और अपने जीवन को सेवा और त्याग के मार्ग पर समर्पित कर एक प्रेरणादायी उदाहरण प्रस्तुत किया है। दिव्यांग होने के बाद भी उन्होंने कभी हार नहीं मानी.भाईयों के लिए जहां आदर्श हैं, वहीं आज हिंगोली जिले में उनका परिवार आदर्श परिवार के रूप में गिना जाता है.

बचपन से नेत्र ज्योति खोने के बाद भी समस्याओं से बिना हारे उन्होंने जीवन में बड़ा सपना देखा और अपनी मेहनत से उसे पूरा किया. जगदीश दुबे का जीवन संघर्ष,आत्मविश्वास और सकारात्मक सोच का प्रतीक है। वे कहते हैं कि माता-पिता की सेवा और आदर्श विचारों पर चलने वाले पुत्र के जीवन में कभी भी पीछे नहीं हट सकता है. पूज्य बाबूजी तथा माताजी को जीवन का प्रेरणास्त्रोत बताते हैं. समाज के जरूरतमंद लोगों की मदद कर मानवता का परिचय भी देते रहे हैं।

दिव्यांग रहने तथा शिक्षक पद से सेवानिवृत्त भाई साहब की सादगी, सेवा भावना और त्याग की भावना सभी को प्रेरणा देती है। जगदीश दुबे की कहानी यह साबित करती है कि सच्ची इच्छाशक्ति और दृढ़ निश्चय के सामने कोई भी बाधा बड़ी नहीं होती।

धौरहरा में आजसे श्रीमद् भागवत कथा

पं.अवधनारायण शुक्ला सुनाएंगे कथा, आयोजक लगे तैयारियों में

पट्टी- पवित्र जगन्नाथ यात्रा पूरा करने के उपलक्ष्य में दलापांडे के धौरहरा निवासी तथा विभिन्न क्षेत्रों में स्थान बनाने वाले रामप्रसाद दुबे, राधेश्याम दुबे परिवार द्वारा गांववासियों को श्रद्धा तथा भक्तिभाव का मौका उपलब्ध कराया जा रहा है. इस कड़ी में १४ मई से २१ मई तक श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन किया गया है. इसमें सुख्यात विद्वान अवधनारायण शुक्ला उर्फ वियोगी महाराज भक्तों को कथा का रसपान कराएंगे. कथा की शुरुवात १४ मई को महिलाओं की कलश यात्रा से होगा. इस आयोजन को भव्यता प्रदान करने के लिए परिवार के सभी सदस्यों द्वारा प्रयास किया जा रहा है. कथा का सभी से लाभ लेने का आग्रह किया गया है. धौरहरा में दुबान नामक क्षेत्र के रूप में सुख्यात क्षेत्र में धार्मिक आस्था को बढ़ावा देने के उद्देश्य से १४ मई से श्रीमद् भागवत कथा का भव्य आयोजन किया जाएगा। यह सात दिवसीय कथा कार्यक्रम प्रतिदिन प्रातः से सायंकाल तक श्रद्धालुओं के लिए आयोजित किया जाएगा, जिसमें प्रसिद्ध कथा वाचक पं.अवधनारायण शुक्ला द्वारा श्रीमद् भागवत महापुराण की कथा का रसपान कराया जाएगा। आयोजकों के अनुसार कथा के दौरान भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं, धर्म, भक्ति और मानव जीवन के आदर्शों पर प्रकाश डाला जाएगा। कार्यक्रम में प्रतिदिन भजन-कीर्तन, प्रवचन तथा धार्मिक अनुष्ठान भी आयोजित किए जाएंगे। सभी श्रद्धालु भक्तों से अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर श्रीमद् भागवत कथा का लाभ लेने की अपील की है। कार्यक्रम को अभूतपूर्व तरीके से सम्पन्न कराने के लिए दुबे परिवार के सभी सदस्यों श्रीमती शिवपतीदेवी दुबे, रामप्रसाद दुबे, राधेश्याम दुबे, राजेन्द्र प्रसाद दुबे, सुभाष दुबे, राजेश दुबे, सुनील दुबे, अनिल दुबे, सर्वेश दुबे, सत्यप्रकाश दुबे सहित सभी सदस्यों द्वारा प्रयास किया जा रहा है. गांव में होने वाली इस कथा के आयोजन को लेकर गांववासियों में भी अपार खुशी देखी जा रही है.

सुख हरि की कृपा और दुख हरि इच्छा

जीवन में जो कुछ भी होता है, उसमें स्वयं को बैठाने वाले लोग ही सुखी होती है. होईहहिं सोई जो राम रचि राखा को जीवन का सूत्र बनाते हुए जब हम अपने मन को यह समझाने में सफल होते हैं कि हमारी जीवन की हर घटना का संबंध सीधे परमात्मा से रहता है. उनकी कृपा के बगैर एक पत्ता भी नहीं हिलता है तो हमारी क्या बिसात है कुछ करने की. जीवन में जब सुखी हो तो इसे प्रभु की कृपा मानो और जब दुख का प्रसंग आए तो इसे प्रभु की इच्छा मानते हुए स्वीकार करना सीख लेना चाहिए. श्रद्धा और विश्वास जब हम भगवान में रखते हैं तो किसी भी स्थिति में वे बुरा नहीं होने देते हैं. इस आशय का मत आदर्श शिक्षक के रूप में लाखों ग्रामीण बच्चों का जीवन संवारने वाले रामप्रसाद दुबे ने किया.

श्रीमद् भागवत कथा के उपलक्ष्य में विदर्भ स्वाभिमान से बातचीत करते हुए उन्होंने कहा कि जीवन में प्रभु की मर्जी के बगैर कुछ नहीं होता है. श्रीरामचरितमानस तथा श्रीमद् भागवत गीता जीवन दर्शन हैं, जीवन का ऐसा कोई सवाल नहीं है, जिसका उत्तर इसमें नहीं है. यही कारण है कि स्वयं तुलसीदासजी ने स्पष्ट किया है होई हैं जो राम रचि राखा, का करी तर्क बढा वहीं शाखा, वही होगा जो विधाता ने तय कर रखा है, हमारी बुद्धि और तर्क कोई काम का नहीं है. जीवन में कर्म का अत्याधिक महत्व रहता है, जब हम अच्छा कर्म करते हैं तो निश्चित तौर पर उसका फल भी परमात्मा वैसे ही देंगे. छल,कपट, बेईमानी से कोई अमीर तो बन सकता है लेकिन उसे सुकून नहीं मिलता है. श्रीरामचरितमानस सहित धर्मग्रंथों का सदा पाठ करने वाले और दया,करूणा से ओतप्रोत रामप्रसाद दुबे के मुताबिक परमात्मा की कृपा सभी पर समान रहती है. जीवन में जो भी मिले, उसे समभाव से स्वीकार करना ही सच्ची शांति का मार्ग है। कई लोगों के पास भरपूर धन-दौलत रहती है लेकिन औलाद अच्छी नहीं रहती है, स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है, ऐसे में दिक्कतें सर्वत्र हैं. उन दिक्कतों से हम कैसे संयम, शांत रहकर रास्ता निकालते हैं, इसका अपना महत्व है.

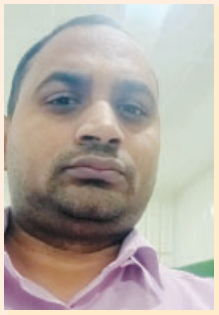

कोई भी काम नहीं होता है छोटा: राजेश दुबे

कड़ी मेहनत, लगन और दृढ़ संकल्प के दम पर फार्मा कंपनी में क्वालिटी मैनेजर राजेश दुबे का मानना है कि जीवन में कोई काम छोटा नहीं होता है. बचपन में समाचार पत्र बांटने से लेकर उच्च शिक्षा हासिल कर वर्तमान कामयाबी का श्रेय माता-पिता के आशिर्वाद को देता है. अपने लक्ष्य से कभी समझौता नहीं किया और निरंतर प्रयास करते रहे।

धौरहरा जैसे छोटे से गांव में संघर्षों से भरे सफर में कई चुनौतियां आईं, लेकिन राजेश ने हार नहीं मानी। समय का सही उपयोग, अनुशासन और सकारात्मक सोच के साथ संयुक्त परिवार के महत्व को ध्यान में रखते हुए कामयाबी प्राप्त की.उन्होंने अपनी मंजिल हासिल की। उनके दोनों बेटे भी पिता की तरह मेहनती और समर्पित हैं. आज राजेश की सफलता न सिर्फ उनके परिवार बल्कि समाज के लिए भी प्रेरणा बन गई है। अगर इरादे मजबूत हों, तो कठिन परिस्थितियों में भी सफलता हासिल की जा सकती है।

समाज व व्यवसाय में अग्रणी है सर्वेश

भाजपा पदाधिकारी, धीर-गंभीर के साथ ही अपनापन से ओतप्रोत सर्वेश दुबे ने अपनी मेहनत, दूरदर्शिता के दम पर गांव के साथ समाज सेवा और व्यवसाय-दोनों क्षेत्रों में अपनी अलग पहचान बनाई है। दयालगंज में जहां दवाई दुकान का संचालन करते हैं, वहीं माता-पिता के आदर्श संस्कारों के साथ संयुक्त परिवार को सबसे बड़ी ताकत मानते हैं. छोटे भाई के रूप में निर्मल, निस्वार्थ रहकर बड़े भाई के कंधे से कंधा मिलाकर चलते हैं और निरंतर प्रगति कर रहे हैं. उनका मानना है कि जीवन केवल स्वयं के लिए जीने नहीं मिला है बल्कि मानवता की सेवा के साथ ही परिवार की एकता और मजबूती में सभी सदस्यों का योगदान मिलना चाहिए. सामाजिक कार्यों में सक्रिय भागीदारी निभाकर लोगों का विश्वास भी जीता है।

वे गांव में सामाजिक, राजनीतिक के साथ ही धार्मिक उपक्रमों, जनहित कार्यों और जरूरतमंदों की सहायता में हमेशा आगे रहते हैं। उनके प्रयासों से कई लोगों को प्रेरणा मिली है और समाज में सकारात्मक बदलाव देखने को मिला है।सर्वेश दुबे की कार्यशैली, समर्पण और सेवा भाव ने पिता पं.रामप्रसाद दुबे के साथ ही दुबे परिवार का नाम रोशन किया है.

राम-जानकी मंदिर है शान

धौरहरा से आसपुर देवसरा की ओर जाने वाले मुख्य मार्ग पर स्थित श्रीराम जानकी मंदिर हजारों भक्तों की आस्था का केन्द्र है. मंदिर से बचपन से जुड़ा रहने के कारण इसका अनुभव अक्सर आया. गांव में ८वीं तक की शिक्षा के दौरान इस मंदिर में मां के साथ आने और दर्शन का पुण्यलाभ मिलता था. यह मंदिर भक्तों के आकर्षण का जहां केन्द्र है, वहीं मंदिर के पास स्थित कुएं का शीतल जल आज भी प्रभु की कृपा का एहसास कराता है. ६० साल पुराना यह मंदिर आज भी श्रद्धा और आस्था रखने वाले भक्तों के लिए आत्मबल तथा मानसिक ताकत प्रदान करने वाला केन्द्र है. आस्था तथा विश्वास से बड़ी ताकत नहीं हो सकती है, यह मंदिर इसका ज्वलंत उदाहरण है.

छोटे भाई सत्यप्रकाश पर मुझे सदा गर्व

मालिक बनकर ९-१० लोगों को दिया धर्म के क्षेत्र में सत्यप्रकाश ने रोजगार

जीवन में बचपन से लेकर विपरीत स्थितियों के बाद भी मेरे कम पढ़े छोटे भाई सत्यप्रकाश ने जिस तरह से अपनी मेहनत, लगन और कल्पनाशीलता से कामयाबी की मंजिल हासिल की, स्वयं रोजगार के साथ ८-९ कलाकारों को भी रोजगार दिया और दोनों बेटों को भी जिस तरह से अपने पैरों पर खड़ा किया, उसका मुझे सदा गर्व रहता है. दुर्वासा मुनि जैसा क्रोधी है लेकिन दिल का उतना ही कोमल है, आत्मीयता से जब मैं गले लगाता हूं तो उसकी आंखें नम हो जाती हैं. जीवन में बड़े भाईयों में जगदीश दुबे सदा मेरे प्रेरणा स्त्रोत रहे हैं, वहीं जीवन के अनुभव कई किताबों का ज्ञान देने में सक्षम होने की शक्ति रखते हैं. मेरा मानना है कि घर की महिलाएं ही परिवार के हर सदस्य के बीच अपनेपन की कड़ी होती हैं, जहां महिलाओं में यह गुण होता है, वहां भाईयों के बीच कभी विवाद नहीं होता है. बचपन से पढ़ने में दिलचस्पी नहीं रखने वाले सत्यप्रकाश ने गरीबी से लेकर अपमान तक झेला लेकिन कभी हिम्मत नहीं हारी. बात जब भी

मेहनत की होती है, वह सदा आगे रहता है. बचपन से ही गरीबी के संघर्ष के साथ ही उसने बिना किसी प्रशिक्षण के संगीत के क्षेत्र में कदम रखा, पगडीवाले हनुमानजी की कृपा बरसने लगी और जय माता दी मानस मंडल की स्थापना की. पहले १००० रूपए में सुंदरकांड का कार्यक्रम होता था लेकिन पिता की मेहनत को समझते हुए दोनों बेटों ऋषिकेश और रितेश ने भी पिता के कंधे से कंधा मिलाकर मंडल को कामयाबी की ऊंचाई प्रदान की. बोलने में सख्त लेकिन दिल का सुंदर सत्यप्रकाश हर काम पूरी ईमानदारी और समर्पण के साथ करता है। पत्नी अनिता ने हर कदम पर साथ दिया. पढ़ाई हो या घर की जिम्मेदारियां, वह कभी पीछे नहीं हटता। कठिन परिस्थितियों में भी उसने हार नहीं मानी, बल्कि और ज्यादा मेहनत करके अपने लक्ष्य की ओर बढ़ा, आज कार्यक्रमों का सिलसिला चलता है और स्वयं के साथ ही ८-९ कलाकारों को रोजगार भी दिया है. गांव से अत्याधिक लगाव रहने के कारण जब भी मौका मिलता है, गांव होकर आता है. उसका कहना है कि कमाना आसान है लेकिन नियोजन के साथ जीवन जीना कठिन है. भाईयों में सबसे छोटा होने के बावजूद वह अपने परिवार की हर जरूरत को पूरा करता है और मेरे भाई की मेहनत पर मुझे अक्सर गर्व होता है. वह हमेशा माता-पिता का सम्मान करता है और उनके सपनों को पूरा करने के लिए दिन-रात मेहनत करता है। उसका अनुशासन और सकारात्मक सोच उसे दूसरों से अलग बनाती है। मुझे इस बात का सबसे ज्यादा गर्व है कि वह केवल अपने लिए नहीं, बल्कि पूरे परिवार के लिए आगे बढ़ना चाहता है। उसकी मेहनत और संघर्ष ने जहां रंग लाया है, वहीं यह साबित किया है कि स्थितियां कैसी भी हों, अगर मेहनत, लगन और जिद है तो हर मंजिल प्राप्त की जा सकती है.

राजेन्द्र प्रसाद दुबे : जिनकी मेहनत पर गर्व

परिवार में बड़े भाई का स्थान केवल एक सदस्य का नहीं, बल्कि एक मार्गदर्शक, संरक्षक और प्रेरणा स्रोत का होता है। जब वही बड़ा भाई मेहनती, जिम्मेदार और दृढ़ संकल्प वाला हो, तो उसका व्यक्तित्व पूरे परिवार के लिए गर्व का कारण बन जाता है। ऐसे ही हैं हमारे बड़े भाई राजेन्द्र प्रसाद दुबे. बचपन से संघर्ष का सिलसिला अभी भी जारी है.

जीवन में स्थितियां कुछ ऐसी रही कि बचपन से ही अपनी इच्छाओं को मारने के बाद भी परिवार को बेहतरीन जीवन देने का प्रयास किया. अभी भी संघर्ष का सिलसिला चल रहा है. माता-पिता के आशिर्वाद का जीवन में अत्याधिक महत्व होता है. अपनी कठिनाइयों को चेहरे पर आने नहीं देते, लेकिन दूसरों के दुख को तुरंत समझ लेते हैं. जब हम उसे दिन-रात मेहनत करते देखते हैं, तब मन में अपने आप सम्मान और गर्व की भावना जाग उठती है। उच्च विद्याविभूषित रहने के साथ ही प्रापर्टी के साथ कोचिंग,खेती जैसे कई क्षेत्रों में उन्होंने आजमाया और सफलता प्राप्त की. ऐसे बड़े भाई का साथ होना जीवन की सबसे बड़ी ताकत है। कुछ मामले में उनसे सीखने लायक है. वह कहते हैं कि जीवन में संभव हो तो ५० साल की उम्र के बाद झूठ नहीं बोलनी चाहिए और परिवार के हर सदस्य को एक-दूसरे की भावनाएं समझते हुए सहयोग के माध्यम से आगे बढ़ना चाहिए. इसी तरह निर्मल मन, माता-पिता के प्रति अच्छी सोच के साथ ही अपनों के प्रति आत्मीयता जैसी खूबियां भी भाग्य को भी बदलने की ताकत रखती हैं.

मेहनत और सामाजिकता में अग्रणी है सुनील

हमारे छोटे भाई सुनील दुबे ने पिता के कंधे से कंधा मिलाकर खेती के साथ ही कड़ी मेहनत, ईमानदारी और सकारात्मक सोच के बल पर समाज व गांव में सम्मान हासिल किया है। वे अपने काम के प्रति समर्पित रहते हुए निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर हैं। खेती में आगे रहने के साथ ही धार्मिकता में अग्रणी है.

साथ ही सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी निभाकर वे जरूरतमंदों की सहायता करते हैं. परिवार को लेकर उनमें पिता पं.राधेश्याम दुबे की तरह जहां गौरव रहता है, वहीं परिवार की एकता के लिए समर्पित रहते हैं. मिलनसारता और सहयोगी स्वभाव के कारण वे लोगों के बीच लोकप्रिय हैं।सुनील की कार्यशैली, लगन और समाजसेवा की भावना उन्हें मेहनत और सामाजिकता दोनों क्षेत्रों में अग्रणी बनाती है।

१०८ भागवत कथाओं का पुण्य है जिनके साथ

समाजसेवी चंद्रकुमार जाजोदिया का आदर्श, अभी तक हुई ७५ भागवत कथाएं

भारतीय सनातन परंपरा में श्रीमद्भागवत महापुराण को भक्ति, ज्ञान और वैराग्य का अद्वितीय संगम माना गया है। इस पावन ग्रंथ की कथा सुनना और करवाना दोनों ही अत्यंत पुण्यदायी माने जाते हैं। जब कोई श्रद्धालु १०८ भागवत कथाओं के आयोजन का संकल्प लेता है, तो वह केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं करता, बल्कि समाज में आध्यात्मिक जागृति का दीप प्रज्वलित करता है। ऐसे ही व्यक्ति हैं समाजसेवी, दानशूर चंद्रकुमार उर्फ लप्पीभैया जाजोदिया. १०८ भागवत कथाओं का संकल्प लिया था, इसमें से ७५ कथाएं पूरी हो गई हैं.

भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं, उपदेशों और जीवन मूल्यों से भरपूर भागवत कथा मनुष्य को धर्म, प्रेम और करुणा का मार्ग दिखाती है। १०८ का अंक स्वयं में पवित्र माना गया है, जो पूर्णता और आध्यात्मिक साधना का प्रतीक है। इसलिए १०८ भागवत कथाओं का आयोजन जीवन में विशेष पुण्य और सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है। समाज में सद्भाव, संस्कार और नैतिक मूल्यों का प्रसार कराने के उद्देश्य से उन्होंने यह संकल्प लिया. कथा के माध्यम से युवा पीढ़ी को अपनी संस्कृति से जुड़ने का अवसर मिलता है और जीवन को सही दिशा मिलती है।

कहा जाता है कि भागवत कथा का श्रवण मन को शुद्ध करता है, पापों का नाश करता है और भगवान की कृपा प्राप्त कराता है. १०८ कथाओं का संकल्प लेकर स्वयं के साथ अनेक लोगों के जीवन में भी भक्ति और सकारात्मकता का संचार किया है. १०८ भागवत कथाओं का संकल्प पूरा करने के करीब चंद्रकुमार उर्फ लप्पीभैया जाजोदिया पहुंच रहे हैं. अभी तक महाराष्ट्र के विभिन्न हिस्सों में ७५ कथाएं हो चुकी हैं. धन तो कईयों के पास रहता है लेकिन इस तरह की पुण्यदायी सोच केवल और केवल लप्पीभैया जैसा आदर्श भक्तों में ही हो सकती है.

गांव की आस्था का केन्द्र बाबा कुबेरनाथ धाम

श्रद्धा तथा विश्वास में अपार ताकत होती है. इसका अनुभव धौरहरा के संत शिवशंकरदास पाण्डेय के तप से पावन बाबा कुबेरनाथ धाम में भक्त करते हैं. प्राकृतिक हरियाली से परिपूर्ण इस मंदिर में पहुंचते ही मन प्रसन्न हो जाता है. यहां पर भगवान भोलेनाथ का शिवलिंग भक्तों की जहां मनोकामनाएं पूरा करता है, वहीं मंदिर में दूर-दूर से भक्त आकर दर्शन तथा पूजा-अर्चना कर अपना जीवन धन्य करते हैं. मंदिर के पुजारी यादवजी स्वयं भी भोलेनाथ के भक्त हैं और भोलेनाथ की निरंतर सेवा करते हैं. यह जहां हजारों भक्तों की आस्था का केन्द्र है, वहीं दूसरी ओर जागृत मंदिर रहने से यहां श्रद्धा तथा विश्वास के साथ की गई मनौती पूरी होती है.

भागवत कथा परिवार के लिए सौभाग्य का पल

दुबे परिवार द्वारा आयोजित श्रीमद् भागवत कथा पूरे परिवार के लिए सौभाग्य का फल है. परिवार की तीनों पीढ़ियां सौभाग्यशाली है, जिन्हें यह सौभाग्य देखने का मौका मिला है. इस आशय का मत अनिल कुमार दुबे ने व्यक्त किया. बचपन से ही भोलेनाथ के भक्त और भाईयों का प्रेमी अनिल का स्वभाव भले ही गर्म है लेकिन वह साफ दिल का व्यक्ति रहने के कारण आत्मीयता और अपनापन से भरा हुआ है. वर्तमान में वह सह परिवार मुंबई में रहने के बाद भी गांव से निरंतर संपर्क में रहता है और परिवार के हर कार्यक्रम में सहभागी होते हैं. श्रीमद् भागवत कथा ज्ञान यज्ञ के उपलक्ष में पूरा परिवार एकजुट होने की खुशी स्पष्ट रूप में दिखाई दे रही. कथा का सभी से लाभ लेने का आग्रह भी अनिल कुमार दुबे ने किया.

भक्तिभाव के साथ धर्मसेवा में आगे हैं पं.ज्ञानप्रकाश दुबे

जीवन में कई बार सभी बातें मन मुताबिक नहीं होती हैं, लेकिन परिवार में उसे मन में लगाने की बजाय जीवन मिला है तो जीने का प्रयास करना चाहिए. आचार्य ज्ञानप्रकाश दुबे बचपन से ही भक्तिभाव में रत थे, पहले पढ़ाई में पीछे रहने के बाद बाद में शिक्षा को लेकर आगे बढ़ गए. ज्योतिषशास्त्र का ज्ञान भरपूर है लेकिन कहते हैं कि विद्या विनयेन शोभते का सिद्धता जीवन में सदैव आगे बढ़ाता है.

बचपन से अथक मेहनत करते हुए परिवार को संभालने के साथ ही निर्मल मन के धनी हैं. बचपन में उनकी संवेदनशीलता, आत्मीयता और परिवार के प्रति प्रेम सराहनीय कहना गलत नहीं होगा. आज भी उम्र के ५६ साल की उम्र में भी परिवार की खुशहाली के लिए सदा प्रयास करते हैं. विद्वता के साथ ही वर्तमान दौर में विनम्रता की जो जरूरत अत्याधिक होती है, उसमें कहीं पिछड़ने के कारण तमाम योग्यता रहकर भी जिस ऊंचाई पर होना चाहिए था,वहां तक नहीं पहुंच पाए. लेकिन वे कहते हैं कि सब कुछ परमात्मा की इच्छा से होता है, ऐसे में शिकायत करने का कोई विषय नहीं है.

भक्ति, प्रेम, समर्पण के साथ भागवत कथा देती है पूर्ण आस्था का संदेश

श्रीमद्भागवत कथा मुख्य रूप से भक्ति, प्रेम, समर्पण और ईश्वर के प्रति पूर्ण आस्था का संदेश देती है। यह बताती है कि भगवान केवल प्रेम के भूखे हैं और निष्काम भक्ति से ही उन्हें पाया जा सकता है। कथा यह सिखाती है कि जीवन के दुखों से मुक्ति और आध्यात्मिक शांति का एकमात्र मार्ग भगवान का स्मरण और सत्संग है।

भागवत कथा के प्रमुख संदेश:

निस्वार्थ भक्ति: अहंकार त्याग कर भगवान को सब कुछ समर्पित करना ही सच्ची भक्ति है।

मोह-माया से मुक्ति: संसार नश्वर है, इसलिए अपनी आत्मा को भगवान में लगाकर मोक्ष प्राप्त करें।

प्रेम और करुणा: भगवान हर जीव में वास करते हैं, इसलिए सभी के प्रति प्रेम और दया भाव रखें।

मन की शुद्धि: कथा सुनने से मन पवित्र होता है और मानसिक विकारों का नाश होता है।

ज्ञान और कर्म का तालमेल: कर्म करते हुए भी ईश्वर का स्मरण (हरि स्मरण) जीवन का सार है।

यह कथा कृष्ण प्रेम के माध्यम से मानव जीवन को देवत्व की ओर ले जाने का मार्ग प्रशस्त करती है।

पेज १ से आगे

श्रद्धा और विश्वास के प्रतीक हैं मां पार्वती-महादेव

परिस्थितियाँ कितनी ही कठिन क्यों न हों।

नतीजा सुनिश्चित रहता है

उन्होंने श्रद्धा और विश्वास को विस्तार पूर्वक महत्व बताते हुए कहा कि अपने कार्य के प्रति श्रद्धा, अपने गुरु के प्रति श्रद्धा, अपने लक्ष्य के प्रति श्रद्धा रखने के बाद उसका परिणाम निश्चित ही शानदार आता है. जब मन में श्रद्धा होती है, तो व्यक्ति पूरी निष्ठा से प्रयास करता है, और यही निष्ठा उसे सफलता के करीब ले जाती है। जीवन में शिकायतों की बजाय समाधान बनने का प्रयास करना चाहिए.

विश्वास वह आधार है, जिस पर जीवन की इमारत खड़ी होती है। विश्वास खुद पर हो, अपने कर्मों पर हो और ईश्वर पर रहता है तो रास्ते अपने आप बनते चले जाते हैं। कई बार जीवन में ऐसे मोड़ आते हैं, जहाँ तर्क काम नहीं करता, केवल विश्वास ही सहारा बनता है. वही विश्वास हमें गिरने से बचाता है और आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है.

उच्च विद्याविभूषित रहने के बाद भी विनम्रता के धनी पं.अवधनारायण शुक्ल के मुताबिक उनकी इच्छा शिक्षक बनने की थी लेकिन प्रभु को उन्हें अपनी सेवा में लेना था, शायद यही कारण है कि इस क्षेत्र में आए. वर्ष २०१४ से श्रीमद् भागवत तथा श्रीराम कथा व देवी भागवत कथा आरंभ की. अभी तक सैकड़ों कथाएं हुई हैं. सालभर में कई कथाएं होने की जानकारी दी. श्रद्धा हमें जोड़ती है, विश्वास हमें मजबूत बनाता है और दोनों मिलकर जीवन को अर्थपूर्ण बनाते हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि जीवन में अधिक तर्क नहीं करते हुए जीवन की डोर प्रभु पर छोड़ देनी चाहिए, कर्म करना हमारे हाथ में है. जब कर्म अच्छा रहता है तो परमात्मा का साथ रहता है और जब प्रभु का साथ होता है तो बाकी किसी के साथ की जरूरत नहीं रहती है.

पेज १ से आगे

भक्तिभाव सदा बढ़ाने की कृपा करना प्रभु

है। जब हम अपने कर्तव्यों को ईमानदारी और निष्ठा से निभाते हैं, दूसरों की मदद करते हैं और सत्य के मार्ग पर चलते हैं, तब हमारा जीवन स्वयं ही एक पूजा बन जाता है।

भक्तिभाव बढ़ाने के लिए नियमित प्रार्थना, सत्संग, भजन-कीर्तन और धर्मग्रंथों का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है। यह साधन मन को शुद्ध करते हैं और हमें सही मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं। साथ ही, अहंकार, क्रोध और लोभ जैसे विकारों से दूर रहकर प्रेम, करुणा और क्षमा को अपनाना भी भक्ति का महत्वपूर्ण हिस्सा है। जीवन में सभी जीवों पर दया भावना रखना और अपने शब्दों तथा वाणी से किसी के दिल को नहीं दु:खाना भी प्रभु भक्ति में आता है. जीवन में सुख-दुख से कोई नहीं छूटा, स्वयं प्रभु श्रीराम नहीं छूटे लेकिन भक्तिभाव तथा सत्संग में रहने वाले पर यह ज्यादा असर नहीं कर पाती है. कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य रखने और विश्वास बनाए रखने की शक्ति देती है।भक्तिभाव को सदा बढ़ाते रहना ही जीवन को सुख, शांति और संतोष से भर देता है। १४ मई से शुरू श्रीमद् भागवत कथा का सभी भक्तों से लाभ लेकर जीवन धन्य करने का आग्रह भी जगन्नाथ यात्रा पूरी कर चुके पं.राधेश्याम दुबे ने किया.

जीवन संवारने वाला हमारा विद्यालय

जीवन को संवारने में माता-पिता के साथ ही हमारे विद्यालयों का महत्वपूर्ण योगदान होता है. सीनियर बेसिक विद्यालय धौरहरा मेरे जीवन के लिए ऐसा ही विद्यालय है. मेरी प्राथमिक शिक्षा प्राथमिक विद्यालय तिबीपुर में और ५ वीं से ८वीं तक की शिक्षा इस विद्यालय में हुई. उस समय के सभी शिक्षक केवल शिक्षक नहीं बल्कि छात्रों का भाग्य संवारने वाले पालक कहना गलत नहीं होगा. बचपन में शिक्षा के साथ उन गुरूजनों ने जो संस्कार दिया, आज शायद वही आदर्श संस्कार हमारे जीवन को संवार रहे हैं और कामयाबी की ऊंचाई के साथ ही निर्व्यसन रहने की प्रेरणा देते हैं. आज भी गांव की शान यह विद्यालय है. धन्य है यह विद्यालय और हमारे आदरणीय शिक्षक, जिन्होंने अपनी सेवा के माध्यम से लाखों छात्रों का जीवन संवारा. इस विद्यालय से शिक्षीत छात्र वर्तमान में विभिन्न क्षेत्रों में देश सेवा तथा मानव सेवा कर रहे है.

तिवारीपट्टी की शान हैं देवराज तिवारी

स्वार्थ के दौर में बहुत कम लोग ऐसे होते हैं जो आसमानी कामयाबी हासिल करने के बाद भी अपने गांव से लगाव रखते हैं और गांव की शान के खातिर जितना संभव होता है, करने का प्रयास करते हैं. वर्ना आज के दौर में धन सम्पत्ति के लिए भाई-भाई का नहीं होता है. ऐसी औलादें भी भरपूरे हैं, जो माता-पिता की विरासत को भी मिट्टी में मिलाने में कम नहीं हैं. लेकिन तिवारी पट्टी में पैदा होकर अपनी मेहनत,लगन से आज डी.राज डेअरी के माध्यम से अमरावती में कामयाबी का इतिहास रचने के साथ ही सेवाभावी देवराज तिवारी सामाजिक, धार्मिक के साथ ही ब्राह्मण एकता के प्रयासों में योगदान देते हैं. उन्होंने अपनी मेहनत, लगन और संस्कारों से पूरे गांव का नाम रोशन किया है। उनके जैसे लोगों को गांव की शान कहा जाता है। ये न केवल अपने परिवार का सहारा बनते हैं, बल्कि समाज तथा गांव के लिए भी एक मिसाल कायम करते हैं।

बचपन से ही संघर्ष करने के बाद भी मेहनत के बलबूते कामयाबी का इतिहास रखने का जज्बा उन्होंने सदा रखा था. निजी नौकरी से लेकर मालिक तथा वर्तमान में २० से अधिक लोगों को जहां रोजगार दिया है, वहीं आज भी अत्याधिक व्यस्त रहते हैं. लेकिन गांव के प्रति उनके मन में अपार प्रेम का अनुभव विदर्भ स्वाभिमान ने उनसे बातचीत के दौरान किया. होनहार युवक के रूप में उन्होंने कठिन परिस्थितियों के बावजूद हार नहीं मानी, बल्कि संघर्ष को ही अपनी ताकत बनाकर आसमानी कामयाबी हासिल की. बिना किसी स्वार्थ के गांव के गरीब बच्चों की मदद, धार्मिक आयोजन स्वयं के खर्च से करने के साथ ही गांव के विकासार्थ सदैव चिंतन कर उस पर अमल करते हैं. उनकी विशेषता है कि वे आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ अपनी संस्कृति और परंपराओं से भी जुड़े रहे हैं. वे बुजुर्गों का सम्मान करते हैं, छोटे बच्चों को प्रेरित करते हैं और समाज में एकता का संदेश देने का काम करते हैं. ऐसे लोगों को प्रोत्साहन और आत्मीयता की जरूरत होती है. उनका कहना है कि जिस गांव में वे पले-बढ़े, उस गांव के लिए जितना संभव हो अपनी ओर से करने का प्रयास करते हैं. नवंबर महीने में स्वयं के खर्च से गांव में श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन करने वाले हैं, इसके अलावा ब्राह्मण एकता को मजबूत करने के लिए भगवान परशुराम जन्मोत्सव पर हजारों लोगों को शरबत वितरण सहित अन्य सामाजिक उपक्रम का खर्च उठाने में आगे रहते हैं. उनका कहना है कि गांव का संस्कारी युवक शहर में रहकर भी अपना स्वयं का अस्तित्व पैदा करता है, सभी गांववासियों का प्रेम मिलने पर यह हिम्मत और बढ़ती है. कुछ महीने पहले गांव में जाकर उन्होंने अखंड श्रीरामचरितमानस का पाठ करवाते हुए महाप्रसाद कार्यक्रम रखा था, इसका भी हजारों ने लाभ लिया और गांव की शान देवराज तिवारी की सराहना की. साथ ही उनके स्वस्थ और दीर्घायु की कामना की. कुछ साल पहले ठंडी के दिनो में गांव में कार्यक्रम लेकर १५१ गरीबों और गांव के जरुरतमंदो को कंबल का वितरण किया. उनकी इस पहल की सराहना तिवारी पट्टी धौरहरा गांव ने की है.

आत्मीय-प्रेरणादायी अय्यर दम्पति

जीवन में कुछ लोगों के साथ बिताया गया हर पल यादगार बन जाता है, उनके प्रति अपनापन,प्रेम तथा सम्मान कभी कम नहीं होता है, ऐसे ही दम्पति हैं लाखों नेत्रहीनों का जीवन प्रकाशमान करने वाली डॉ.नरेन्द्र भिवापुरकर अंध विद्यालय की पूर्व प्राचार्य गौरी अय्यर और पति गणेश अय्यर की आत्मीयता, तकलीफ में भी मुस्कराने की अदा प्रेरणादायी कहना गलत नहीं होगा. यह दम्पति रिश्तों को निभाने के मामले में अजूबा से कम नहीं है. आत्मीय और प्रेरणादायी दम्पति गौरी अय्यर रिश्ते का सबसे सुंदर रूप है, जहाँ दो व्यक्ति केवल साथ नहीं रहते, बल्कि एक-दूसरे के जीवन को संवारते हैं, संबल देते हैं और हर परिस्थिति में साथ खड़े रहते हैं। दोनों के बीच का निर्मल प्रेम लाखों युवा दम्पतियों को प्रेरणा देने की ताकत रखता है.

अय्यर दम्पति रिश्ता केवल स्वार्थ के लिए नहीं रखता है बल्कि जिसे चाहते हैं, उसके लिए हर तरह से कवच देने का काम करते हैं. यह केवल प्रेम तक सीमित नहीं होता, उसमें विश्वास, समझ, त्याग और सम्मान की गहरी नींव होती है। अभी तक दोनों ने जितना संघर्ष झेला है, जितने ऑपरेशन हुए होंगे, स्वास्थ्य संबंधी समस्या आई होगी, दूसरा अच्छा-खासा दम्पित टूट जाता. लेकिन मुझ जैसे व्यक्ति के लिए यह दोनों प्रेरणा और आत्मीयता के स्त्रोत हैं. दोनों जीवन में सदा खुश रहते हैं और अन्यों को भी खुशियां देते हैं. आज के दौर में ऐसे दम्पति बिरले हैं, जो दिक्कतों में भी मुस्कराते हैं और दूसरों को खुशियां देती हैं. दम्पति की सबसे बड़ी खासियत यह है कि वे एक-दूसरे को बदलने की कोशिश नहीं करते, बल्कि जैसे हैं वैसे ही स्वीकार करते हैं। छोटी-छोटी खुशियों को साझा करना, मुश्किल समय में धैर्य रखना और हर दिन को साथ मिलकर बेहतर बनाते हैं. उनका जीवन दूसरों

को यह सिखाता है कि रिश्तों को निभाने के लिए बड़े शब्दों या दिखावे की नहीं, बल्कि सच्चे मन और निरंतर प्रयास की जरूरत होती है। प्रभु गोविंदा दोनों को सदा प्रसन्न रखें, स्वस्थ रखें और सदा मुस्कराते रहें, हम तो यही कामना करते हैं.

धौरहरा में समस्त दुबे परिवार द्वारा आयोजित श्रीमद् भागवत कथा को हमारी हार्दिक शुभकामनाएं.

कर्म अच्छा है तो धर्म साथ देता है

जीवन में अगर आपका कर्म अच्छा होता है तो परमात्मा साथ देते हैं. कर्म को हर धर्म में महत्वपूर्ण बताया गया है. सत्संग और सद्विचार जीवन को आदर्श दिशा देते हैं. श्रीमद् भागवत कथा तथा राम कथा की जीवन को सद्गुणी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है. धौरहरा में समस्त दुबे परिवार द्वारा आयोजित कथा को हमारी हार्दिक शुभकामनाएं.

प्राचार्य सुधीर महाजन,
सौ.योगिता महाजन
तथा परिवार, अमरावती

जीवन के अलौकिक क्षण

संगीतकार रविंद्र जैन एवं लप्पी भैय्या

अमरावती की पूर्व विभागीय आयुक्त डॉ.श्वेता सिंघल

डॉ.कमलताई गवई के हाथों सत्कार

भारत के भजन सम्राट अनुप जलोटा के साथ

अयोध्या के शरयू नदी पर स्नान में शामिल सत्यप्रकाश, राजेश के साथ

प्रभु, आपने बहुत दिया, माता-पिता की कृपा

जीवन में माता-पिता के प्रति अच्छी सोच और भावना का हमारी प्रगति से गहरा संबंध रहता है. माता-पिता का सम्मान करने वाले बेटे को किसी का पैर पकड़ने की जरूरत नहीं पड़ती है और परमेश्वर की कृपा सदैव बनी रहती है. प्रभु को धन्यवाद देने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं. आपने मेरी औकात से कई गुना बढ़कर दिया है, भजन सम्राट अनुप जलोटा, संगीतकार रवीन्द्र जैन, लखविंदरसिंह लख्खा के साथ ही जानी-मानी हस्तियों के साथ रहने का मौका मिला तो यह आपकी कृपा है. दिव्यांग रहकर भी आपने मुझे मेरी योग्यता से अधिक दिया तो निश्चित तौर पर दादी-दादा, माता-पिता का आशिर्वाद है. इस संसार में जब हम अपने जीवन पर शांत मन से दृष्टि डालते हैं, तो महसूस होता है कि हमें बिना मांगे ही कितना कुछ मिला है। यह जीवन, यह प्रकृति, अपनों का स्नेह, सांसों की लय सब कुछ आपकी कृपा का परिणाम है। प्रभु ने हमें इतना दिया है कि उसका पूर्ण हिसाब शब्दों में नहीं बांधा जा सकता।

हम अक्सर उन चीजों पर ध्यान देते हैं जो हमारे पास नहीं हैं, लेकिन यदि एक क्षण ठहरकर देखें तो पाएंगे कि जो मिला है, वही हमारे लिए सबसे बड़ा आशीर्वाद है। स्वस्थ शरीर, सोचने-समझने की शक्ति, प्रेम करने वाले लोग और हर दिन एक नई शुरुआत का अवसर,यह सब प्रभु के अनंत उपकार हैं।

जीवन में कोरोना के समय मौत के करीब जाकर भी वापस आया हूं तो निश्चित मेरे प्रभु की कृपा है. प्रभु की कृपा केवल सुख में ही नहीं, बल्कि संघर्षों में भी छिपी होती है। कठिन समय हमें मजबूत बनाता है, सही रास्ता दिखाता है और जीवन का सच्चा अर्थ समझाता है। कई बार जो हम खोते हैं, वही हमें कुछ नया पाने के लिए तैयार करता है। इस प्रकार हर परिस्थिति में प्रभु का कोई न कोई संदेश छिपा होता है। कृतज्ञता का भाव ही सच्ची भक्ति है। जब हम दिल से धन्यवाद कहना सीख जाते हैं, तब जीवन की हर छोटी-बड़ी बात में आनंद मिलने लगता है। प्रभु के प्रति आभार व्यक्त करने के साथ ही दुनिया की मृग मरीचिका में स्वयं को पहचान लेना चाहिए. हर पल को स्वीकार करना और उसमें अच्छाई ढूंढना ही सच्ची साधना है। कुल मिलाकर प्रभु ने हमें जितना दिया है, वह हमारी अपेक्षाओं से कहीं अधिक है। उनके अनंत उपकारों के प्रति सिर झुकाकर आभार प्रकट करना ही हमारा कर्तव्य है। जब यह भाव मन में स्थिर हो जाता है, तब जीवन में शांति, संतोष और सच्ची खुशी अपने आप आ जाती है। दिव्यांग रहने के बाद भी प्रभु के अनंत उपकार सदैव आंखों में आंसू ला देते हैं. धन्य हैं करूणानिधान और धन्य ही उनकी मुझ पर करूणा.

अमरावती के प्रथम महापौर डॉ.देवीसिंह शेखावत के साथ